हिन्दी विभाग
डॉ गीता कुमारी

2012
February

BA III year - VI Paper
विषय - काव्यशास्त्र

FEBRUARY
Week-05
30.9.2020
11.45 to 12:30
01
Wednesday
032-334

काव्य हेतु

हेतु का शाब्दिक अर्थ है कारण, अत: काव्य हेतु का अर्थ हुआ काव्य की उत्पत्ति का कारण।

किसी व्यक्ति में काव्य रचना की सामर्थ्य उत्पन्न कर देने वाले कारण काव्य हेतु कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि काव्य कार्य है और हेतु कारण है।

बाबू गुलाबराय ने काव्य हेतु पर विचार करते हुए लिखा है - हेतु का अभिप्राय उन साधनों से है, जो कवि की काव्य रचना में सहायक होते हैं।

भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य हेतु तीन माने गए हैं -

1. प्रतिभा
2. व्युत्पत्ति (ज्ञान उपलब्धि के शास्त्रों का अध्ययन व लोक व्यवहार)
3. अभ्यास

इनमें से प्रतिभा सर्वप्रमुख काव्य हेतु है जिसे काव्यत्व का बीज माना गया है। प्रतिभा के अभाव में कोई व्यक्ति काव्य रचना नहीं कर सकता।

Scanned with CamScanner

प्रतिभा - प्रतिभा वह शक्ति है जो किसी को काव्य रचना में समर्थ बनाती है। राजशेखर ने प्रतिभा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा है - सा शक्तिः केवल काव्य हेतु।

आचार्य भट्टतौत के अनुसार प्रतिभा उस प्रज्ञा का नाम है जो नित नवीन रसानुकूल विचार उत्पन्न करती है: प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता:

आचार्य वामन का मत है कि प्रतिभा जन्म से प्राप्त संस्कार है जिसके बिना काव्य रचना सम्भव नहीं है। अभिनवगुप्त ने प्रतिभा की परिभाषा करते हुए लिखा है प्रतिभा अपूर्व वस्तु निर्माण क्षमा प्रज्ञा

अर्थात् प्रतिभा प्रज्ञा का वह रूप है जिसमें अपूर्व की सृष्टि करने की क्षमता होती है।

कवि इसी के बल पर काव्य सृजन में समर्थ होता है

वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कुन्तक ने प्रतिभा उस शक्ति को माना है जो शब्द और अर्थ में अपूर्व सौन्दर्य की सृष्टि करती है, नाना प्रकार के अलंकारों उक्ति वैचित्र्य आदि का विधान करती है।

प्रतिभा प्रथमोद्भेद समय यत्र वक्रता।
शब्दाभिधेय यो रन्त: स्फुरतीव विभाव्यते ॥

Advice after injury is like medicine after death.

आचार्य मम्मट ने प्रतिभा को एक नया नाम दिया है वे इसे शक्ति कहते हैं और काव्य का बीज स्वीकार करते हैं और काव्य का बीज स्वीकार करते हैं जिसके बिना काव्य सृजन नहीं हो सकता।

प्रतिभा दो प्रकार की होती है - कारयित्री प्रतिभा और भावयित्री प्रतिभा।

कारयित्री प्रतिभा और वह होती है जिसके बल पर कवि कविता लिखता है और भावयित्री प्रतिभा वह होती है जिसके बल पर कोई पाठक कविता को समझता है। सभी आचार्यों ने प्रतिभा के महत्व को स्वीकार किया है और इसे काव्य का मूल हेतु माना है।

डा. नगेन्द्र ने प्रतिभा की असाधारण कोटि की मेधा मानते हुए कहा है कि प्रतिभा को नीरस और साधारण वातावरण अच्छे नहीं लगते वह असाधारणता में खुलकर खेलती है।

2. व्युत्पत्ति - व्युत्पत्ति का शाब्दिक अर्थ है निपुणता, पांडित्य या विद्वत्ता। ज्ञान की उपलब्धि को भी व्युत्पत्ति कहा गया है। यह ज्ञानोपलब्धि शास्त्रों के अध्ययन और लोकव्यवहार के अवेक्षण से होती है। विद्वानों का मत है कि साहित्य के गहन चिंतन - मनन से कवि की उक्ति में सौन्दर्य का समावेश हो जाता है। और उसकी

04 Saturday
035-331

रचना सुव्यवस्थित हो जाती है। रुद्रट ने यह बताया है कि छन्द, व्याकरण, कला, पद और पदार्थ के उचित-अनुचित का सम्यक ज्ञान ही व्युत्पत्ति कहा जाता है। आचार्य मम्मट ने व्युत्पत्ति को एक नया नाम दिया है - निपुणता। यह निपुणता चराचर उचितानुचित विवेकी व्युत्पत्ति:। अर्थात उचित - अनुचित का विवेक ही व्युत्पत्ति है।

05 Sunday
036-330

संस्कृत आचार्यों ने व्युत्पत्ति को काव्य हेतुओं में दूसरा स्थान दिया है।

व्युत्पत्ति के बल पर ही कोई व्यक्ति यह निर्णय कर पाता है कि किस स्थान पर किस शब्द का प्रयोग उचित होगा। सच तो यह है कि प्रतिभा और व्युत्पत्ति समवत रूप में ही काव्य रचना के हेतु है। जैसे लावण्य के बिना रूप फीका लगता है वैसे ही रूप के बिना लावण्य भी आकर्षक नहीं लगता। लोक और शास्त्र का अध्ययन कवि को त्रुटियों से बचाता है।

वर्ण्य विषय का ज्ञान, ऋतु ज्ञान, देश ज्ञान भौगोलिक जानकारी आदि से कविता में त्रुटि

Notes

Humour is by far the most significant activity of the human brain.

आने की सम्भावना नहीं रहती अन्यथा मूर्ख कवि रेगिस्तान में धान की खेती का वर्णन कर सकता है। शब्द शिल्प और भाषा पर अधिकार बहुज्ञता से ही होता है। अतः कवि को निरन्तर सजग रहने की आवश्यकता होती है तभी वह उत्तम काव्य की रचना करने में समर्थ हो पाता है।

अभ्यास -

काव्य निर्माण का तीसरा हेतु अभ्यास है।

भामह ने लिखा है कि शब्दार्थ के स्वरूप का ज्ञान करके सतत अभ्यास द्वारा उसकी उपासना करनी चाहिए, साथ ही अन्य कवियों के कृतित्व का अध्ययन भी करना चाहिए जिससे अभ्यास नित्यप्रति दृढ़ हो जाए। आचार्य वामन ने भी अभ्यास को महत्व देते हुए लिखा है -

अभ्यासोहि कर्मसु कौशलं भावहिति

अर्थात अभ्यास के द्वारा ही कवि कर्म में कुशलता प्राप्त की जा सकती है।

आचार्य दण्डी ने तो अभ्यास को ही काव्य का प्रमुख हेतु माना है। वे तो यहाँ तक कहते हैं कि प्रतिभा और व्युत्पत्ति के अभाव में केवल अभ्यास से ही काव्य रचना में कोई कुशल हो सकता है। सरस्वती की साधना से और शास्त्रों के श्रवण से कोई भी व्यक्ति सफल कवि बन सकता है। दण्डी की यह धारणा अन्य आचार्यों ने स्वीकार नहीं की।

Scanned with CamScanner

प्रतिभा के अभाव में काव्य रचना सम्भव ही नहीं है। फिर कोरा अभ्यास व्यक्ति को कैसे कवि बना सकता है किन्तु अभ्यास के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। प्रारम्भ में प्रतिभा सम्पन्न कवि भी अच्छी कविता नहीं लिख पाते। निरन्तर अभ्यास से ही उनकी कविता निखरती है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रतिभा व्युत्पत्ति और अभ्यास ही प्रमुख काव्य हेतु हैं, किन्तु प्रतिभा सर्वप्रमुख है जिसे व्युत्पत्ति और अभ्यास से निरन्तर निखारा जा सकता है। वस्तुतः ये तीनों समन्वित रूप से ही काव्य के हेतु हैं। जिन्हें अलग-अलग नहीं किया जा सकता।

Scanned with CamScanner